अध्यक्ष की कलम से अंक जन.06

प्रिय साथियों

बहुत समय के ऊहापोह के बाद अन्तत; प्रतीक्षा की घड़ियां समाप्त हुयी और वर्ष 2005 समाप्त होते-होते विदुर ग्रामीण बैंक/मुजफ्फरनगर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, मुजफ्फरनगर/ हिण्डन ग्रामीण बैंक, गाजियाबाद का विलय करके उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक का गठन करने हेतु भारत सरकार ने अध्ययदेश दिनांक 21.12.2005 को जारी कर दिया । वर्ष 2006 के आगमन पर समन्वक अध्यक्ष होने के नाते मैं उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक के अपने सभी साथियों का हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन करता हूँ और उनके परिवारजनों के सुख समृद्वि एवं अच्छे स्वास्थ्य के लिये कामना करता हूँ । इस त्रिवेणी के संगम से उपजा यह नया बैंक उत्तर प्रदेश के 6 महत्तवपूर्ण जिलों का प्रतिनिधित्व करता हैं, जो समूचे प्रदेश की आर्थिक मजबूती के पर्याय हैं ।

मैं पिछले अंको में भी जैसा कि सूचित करता रहा हूँ कि भारतीय बैंकिग व्यवस्था में ग्रामीण बैंको की भूमिका को और सुदृढ बनाने तथा भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़, कृषि क्षेत्र, की सभी आधुनिक बैंकिग सुविधायें,जिनमें कम्प्यूटराइजेशन, इंटरकनेक्टिविटी व एटीएम जैसी सुविधायें शामिल हैं, उपलब्ध कराने हेतु रूपरेखा तैयार कर ली गयी हैं । ग्रामीण बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक की करेन्सी चेस्ट सुविधा उपलब्ध कराने का निर्णय ऐसा दूरगामी कदम सिद्व होगा जिससे वास्तव में देश की ग्रामीण जनता मुद्रा के लेन देन में सीधे-सीधे सहभागिता कर सकेगी । इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले अभिभावकों को अपने होनहार बच्चों को विदेश में शिक्षा प्राप्त कराने हेतु विदेशी मुद्रा उपलब्ध कराने के लिये शहरों के बैंको के अब चक्कर नहीं लगाने होगें । अब विदेशी यात्रा करने हेतु विदेशी मुद्रा भी उनके दरवाजें पर ग्रामीण बैंक बखूवी उपलब्ध करा सकेगें ।

इस दूरगामी नीति के अनुपालन भारत सरकार द्वारा प्रायोजक बैंको को आवश्यक निर्देश दिये जा रहे हैं ताकि उनके द्वारा प्रायोजित ग्रामीण बैंक इन सबके लिये खुद को तैयार कर सकें ।

साथियों, विदुर चेतना को प्रारम्भ हुये एक साल हो गया है और बारह अंक आप लोगों तक पहुँचें होगें । आपने पाया होगा कि प्रत्येक नये अंक में कुछ नया और बेहतर देने का प्रयास किया गया । अब तेरहवॉ अंक व वर्ष 2006 का प्रथम अंक विदुर ग्रामीण बैंक का ही प्रतिनिधित्व नही करेगा अपितु नये बैंक उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक के साथियों की भी अभिव्यक्ति का माध्यम होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं हैं । इस मासिक पत्र का पूर्ववत नाम विदुर चेतना रखने का निर्णय लिया गया हैं क्योकि महात्मा विदुर जी और उनकी नीतियों की आज भी उतनी ही सार्थकता हैं जितनी कि महाभारत काल में थी ।

मुझे पूरा विश्वास है कि उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक के सभी सदस्यों जिनमें पूर्व तीनों बैंको के सदस्य शामिल हैं, अपना व अपने परिवार के सदस्यों का रचनात्मक योगदान करके इस मासिक पत्रिका को नया आयाम प्रदान करेगें । साथियों, अध्यक्ष होने के नाते विदुर चेतना में यह मेरा अन्तिम संदेश होगा । इस संदेश के माध्यम से मैं अपने साथियों से इस नये बैंक को पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के साथ नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का आह्वान करता हूँ । विदुर चेतना आप सभी के विचारों का प्रतिनिधित्व करती रहे ऐसी मेरी आप सबसे अपेक्षायें हैं ।

तुम परिन्दों की तरह उड़ने की जुर्रत तो करो
खुद तुम्हारे बाजुओं में हौसला आ जायेगा ।।

शुभकामनाओं सहित ।

- अनिल कुमार गुप्ता